आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

# पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. ( डॉ. ) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 4 बीकानेर, दिसम्बर, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. ( डॉ. ) कर्नल ए. के. गहलोत

## कुलपति की कलम से.....

## ''मेरा गांव मेरा गौरव'' योजना से कृषक-वैज्ञानिक संवाद हुआ प्रगाढ़

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र जी मोदी की ''मेरा गांव मेरा गौरव'' योजना किसानों के वैज्ञानिकों के साथ संपर्क को ओर अधिक प्रगाढ़ किए जाने का एक अभिनव प्रयास है। इस वर्ष की 25 जुलाई को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पटना में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के स्थापना दिवस पर इस योजना का सूत्रपात किया गया। इस योजना से ''प्रयोगशाला से खेत'' प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए एक गांव की पहचान कर प्रत्येक वैज्ञानिक द्वारा किसान और पशुपालकों को नियमित रूप से सूचना, ज्ञान एवं परामर्शी सुविधाऐं देकर प्रोत्साहित करना है। हमने इस ओर तत्काल पहल करके वेटरनरी विश्वविद्यालय के अधीन राज्य के जिलों में स्थित संघटक महाविद्यालयों, संस्थानों एवं केन्द्रों पर वैज्ञानिकों की टीमों का गठन कर चयनित गांवों में कार्य शुरू कर दिया है। योजना के प्रथम चरण में वैज्ञानिकों ने अपने कार्य क्षेत्र में भ्रमण करके गांवों में सुलभ आधारभूत सुविधाओं और स्थिति का प्रारम्भिक सर्वेक्षण पूरा कर लिया है। विश्वविद्यालय ने विभिन्न जिलों में अपनी स्टॉफ की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए 135 गांवों में इस योजना के तहत कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस योजना में वैज्ञानिक गांव में दौरा करने के साथ-साथ फोन पर भी किसानों को परामर्शी सेवा प्रदान करेंगे। वैज्ञानिकों द्वारा किये गए प्रांरभिक सर्वे में पशुपालन से संबंधित समस्याओं में पशुओं का देरी से ताव में आना, गर्भ का नहीं ठहरना, प्रोलेप्स और पोषण की समस्या सामने आई है। पशुओं में बाह्य परजीवी जैसे चींचड़ से संबद्ध समस्याएं भी पाई गई हैं। किसानों को सामाजिक रूप से फोन एवं मोबाईल संदेश द्वारा कृषि एवं पशुपालन क्रियाओं की जानकारी पहुँचाना और कृषि प्रणाली पर मौसम के अनुसार कृषि एवं पशुपालन साहित्य भी उपलब्ध करवाया जाएगा। वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि एवं पशुपालन में निवेश, ऋण, बीज, उर्वरक, रसायन, कृषि यंत्र, कृषि जलवायु, बाजार आदि से संबंधित जानकारियां उपलब्ध करवाई जाएगी। समाचार पत्रों, सामुदायिक रेडियो आदि के माध्यम से भी क्षेत्र विशेष में किसानों एवं पशुपालकों को जागरूक करेंगे। राष्ट्रीय महत्व के संवेदनशील मुद्दों जैसे भारत स्वच्छता अभियान, जलवायु परिवर्तन, जल संरक्षण, मृदा उर्वरकता आदि विषयों पर भी किसानों को समय-समय पर जागरूक किया जाएगा। वैज्ञानिक ग्रामीण स्तर पर तकनीकी समस्याओं की पहचान करके गांव से सम्बन्धी तकनीकी, सामाजिक व आर्थिक आंकड़े सृजित करेंगे। वैज्ञानिकों, कृषकों व पशुपालकों के मेल-मिलाप के सुखद परिणाम आयेंगे व नवीन तकनीक और वैज्ञानिक ज्ञान का गांव-ढ़ाणी में प्रचार-प्रसार हो सकेगा।

( प्रो. ए. के. गहलोत )

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी वेटरनरी विश्वविद्यालय में 19 दिसम्बर, 2015 से शुरू होने वाले सेन्ड ड्यून इन्टरनेशनल शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल के ब्रोशर का जयपुर में विमोचन करते हुए

# मुख्य समाचार

## प्रथम मारवाड़ ऊंट उत्सव–2015 राजुवास द्वारा पशुपालन प्रदर्शनी एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन

लोकहित पशुपालक संस्थान द्वारा प्रथम मारवाड़ ऊंट उत्सव 6 से 8 नवम्बर 2015 तक सादड़ी (पाली) में आयोजित किया गया। इस उत्सव में राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा पशुपालकों के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के निदेशक क्लिनिक प्रो. टी.के.गहलोत की अगुवाई में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन ग्राम लटाडा (पाली) में किया गया। उत्सव के आयोजक लोकहित पशुपालक संस्थान की डॉ. इल्से कोहलर रोलेफ्सन एवं श्री हनुवन्तसिंह राठौड़ भी इस अवसर पर मौजूद थे। राजुवास प्रसार शिक्षा के निदेशक प्रो. आर. के. धूड़िया ने बताया कि तीन दिवसीय प्रदर्शनी स्टॉल में राजुवास द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में नवीन तकनीक और राज्य के पशुधन की समृद्धि के लिए किये जा रहे कार्यों अनुसंधानों को मॉडल एवं चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में ऊंटों में डेन्टल वायर तकनीक, ऊंटों की उपयोगिता, चारा संरक्षण की साईलेज बैग तकनीक, सम्पूर्ण फीड ब्लॉक, हरा चारा तैयार करने की हाईड्रोपोनिक्स तकनीक, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलेसिस ब्लॉक के अलावा पशुपालकों द्वारा भेड़ की ऊन और बकरी के बालों से निर्मित कालीन को प्रदर्शित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री ओटाराम देवासी, गौपालन एवं देवस्थान राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार एवं पूर्व नरेश श्री गजसिंह जोधपुर ने राजुवास की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

## चूरू जिले में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 2, 3 एवं 21 नवम्बर को गांव सिरसला, मोलीसर बड़ा एवं आसलखेड़ी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों ने भाग लिया।

## वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ (गंगानगर) द्वारा 3 नवम्बर को गांव अमरपुरा जाटान में तथा 23 नवम्बर को गांव माणकसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 49 महिला पशुपालकों सहित 97 पशुपालकों ने भाग लिया।

## टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 19, 20, 21, 23 एवं 24 नवम्बर, 2015 को टोंक जिले के गांव सोनवा, अरणियामाल, साडा, पालड़ा एवं डोडवाड़ी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन शिविरों में 130 पशुपालकों ने भाग लिया।

## डूंगरपुर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 27 एवं 28 नवम्बर को गांव पालदेवल एवं देवलखास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों ने भाग लिया।

## वीयूटीआरसी, अजमेर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 27 एवं 29 नवम्बर को दौलतपुरा एवं श्यार गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 105 पशुपालकों ने भाग लिया।

## बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा 109 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (लाड़नूं) द्वारा 3 नवम्बर को मेघा प्राईवेट आई.टी.आई, बादेला, 20 नवम्बर को बाकलिया गांव में तथा 24 नवम्बर को गांव दुजार में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 109 पशुपालकों ने भाग लिया।

## वीयूटीआरसी, बौजुन्दा द्वारा पशुपालक शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बौजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 3 नवम्बर को गांव देवरी में तथा 21 नवम्बर को गांव बनासीया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 66 पशुपालकों ने भाग लिया।

## वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 20, 24 एवं 27 नवम्बर, 2015 को गांव रंगपुर, मोरपा एवं टोगरिया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन शिविरों में 85 पशुपालकों ने भाग लिया।

## कुम्हेर (भरतपुर) में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर द्वारा 17, 20 एवं 24 नवम्बर को गांव अशोकनगर, नंगला मैथना एवं सोनगांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 87 पशुपालकों ने भाग लिया।

## सिरोही में पशुपालक प्रशिक्षण संपन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 21 एवं 22 नवम्बर को डोडुवा एवं कालन्दरी गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों ने भाग लिया।

## जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा धरमासर में प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा ग्राम पंचायत धरमासर (श्रीडूंगरगढ़) में 2 नवम्बर को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। मुख्य अन्वेषक प्रो. सुभाष गोस्वामी ने पशु जैव विविधता संरक्षण का महत्व बताया। शिविर में डॉ. मोहनलाल चौधरी व डॉ. देवेन्द्र सिंह मनोहर ने देशी गौवंश के संरक्षण व उनके महत्व के बारे में जानकारी दी। शिविर में 26 पशुपालकों ने भाग लिया।

## सूखा व बाढ़ में पशु प्रबंधन पर पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र द्वारा बीकानेर जिले के ग्राम बेलासर में 2 नवम्बर को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के डॉ. तेजपाल ने पशुपालकों को विभिन्न प्रकार के पशु रोगों के बारे में जानकारी देकर निदान के उपाय बताये। डॉ. सोहेल मोहम्मद ने जलवायु परिवर्तन सम्बन्धित पशु आपदाओं, सूखा व बाढ़ पर व्याख्यान दिया। केन्द्र द्वारा विकसित फायर सेफ्टी हट तथा ए.सी. युक्त इमरजेन्सी वार्ड के बारे में जानकारी दी। शिविर में श्री गोपाल उपाध्याय रिसर्च कौंसिल सदस्य का महत्ती योगदान रहा। शिविर में 40 प्रतिभागी शामिल हुए।

## पशु बांझपन चिकित्सा शिविर में 70 पशुओं का उपचार

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग एवं महावीर इन्टरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में 4 नवम्बर को आयोजित खाजूवाला तहसील के 20 बी.डी. गांव में पशु बांझपन पशुचिकित्सा शिविर में 500 पशुओं की चिकित्सा कर 70 बांझपन से ग्रस्त गाय–भैंसों की जांच कर उपचार किया गया। शिविर प्रभारी प्रो. जे.एस. मेहता ने बताया कि गाय–भैंसों में गर्भाशय में संक्रमण हो जाने से प्रजनन में बाधा होती है। महावीर इन्टरनेशनल के जिलाध्यक्ष महेन्द्र जैन और पांच अन्य कार्यकर्ताओं, खाजूवाला पशुचिकित्सा के प्रभारी डॉ. हनुमान चौधरी ने भी चिकित्सा शिविर में अपनी सेवाएं दी।

## स्वदेशी गौवंश राठी के संरक्षण हेतु सर्वे

वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा लूणकरणसर तहसील (बीकानेर) के गांव बालादेसर, रतनीसर, गुसाईना व लालेरा में देशी गौवंश राठी का सर्वे किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. सुभाष गोस्वामी के निर्देशन में लगभग 80 राठी गौवंश पशुपालकों का पंजीकरण किया गया है। सर्वे में डॉ. मोहन लाल गोदारा, डॉ. राजेन्द्र सिंह गढवाल, डॉ. देवेन्द्र सिंह मनोहर, डॉ. मनोज सहारण व श्रवण कुमार ने योगदान किया।

## सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2015

| पशु रोग | पशु/पक्षी प्रकार | क्षेत्र |
|---|---|---|
| पी.पी.आर. | भेड़, बकरी | पाली, सिरोही, कोटा, सीकर, टौंक |
| मुंह–खुरपका रोग | गाय, भैंस, बकरी, भेड़ | धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़, जालोर, नागौर, राजसमन्द, सीकर, टोंक, कोटा, चित्तौड़गढ़ |
| गलघोंटू | भैंस, गाय | जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, धौलपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़, टौंक |
| चेचक/छोटी माता | ऊँट, भेड़, बकरी | बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर |
| लंगड़ा बुखार | गाय | चित्तौड़गढ़ |
| फेसियोलोसिस | भैंस, गाय, बकरी, भेड़ | भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, सीकर,बून्दी |
| सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया) | बकरी, भेड़ | धौलपुर, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर |
| न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण | गाय, बकरी, भेड़ | अजमेर, चित्तौडगढ़, उदयपुर, बीकानेर |
| अश्वों में इन्फ्लुएंजा | घोड़ा | अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर |
| सर्रा (ट्रिपेनोसोमियेसिस) | ऊँट | हनुमानगढ़, कोटा, अजमेर |
| बॉटूलिज्म | गाय | जैसलमेर, जोधपुर |
| रानीखेत | मुर्गियां | अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा |
| इन्फेक्शियस ब्रोंकाईटिस | मुर्गियां | अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा |

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर । फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

## अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें

# थारपारकर गौ नस्ल –गौरव प्रदेश का

थारपारकर नस्ल की गायों को थारी, सफेद सिंधी तथा धूसर सिंधी के नाम से भी जाना जाता है। इस नस्ल का मुख्य प्रजनन क्षेत्र राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर व जोधपुर से लेकर गुजरात के कच्छ के रण तक है। इस नस्ल का उद्भव पाकिस्तान के सिंध प्रांत में हुआ था। थारपारकर नस्ल के पशु थार रेगिस्तान के प्रतिकूल वातावरण के प्रति अत्याधिक अनुकूलित होते हैं। इस नस्ल के पशुओं का रंग सफेद अथवा हल्के धूसर रंग का होता है तथा सींग मोटे तथा घूमावदार होते हैं। यह मध्यम आकार और गठीले शरीर की नस्ल है। इनका ललाट उभरा होता है। सांड तथा गाय का वजन क्रमशः लगभग 475 कि.ग्रा. तथा 295 कि. ग्रा होता है। शरीर की ऊंचाई नर में लगभग 133 से.मी. तथा मादा में 130 से.मी होती है। इस नस्ल के पशु अपनी अच्छी दुधारू क्षमता तथा भारवाहक क्षमता के लिए जाने जाते हैं। गायों का दुग्ध उत्पादन 1800 से 2600 कि.ग्रा. तक पाया जाता है तथा प्रथम ब्यांत के समय आयु लगभग 41 माह होती है। दो ब्यांत के बीच का अंतराल 430 से 460 दिन के मध्य पाया जाता है। योजनाबद्ध प्रजनन तरीकों के अभाव में पशुपालकों द्वारा शारीरिक बनावट के आधार पर पशुओं का चयन किया जाता है। अतः नस्ल सुधार हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 1947 में थारपारकर को झुण्ड पुस्तिका में शामिल किया गया। इस हेतु थारपारकर गाय के नस्लीकृत पशु के लिए 300 दिन का न्यूनतम दुग्ध उत्पादन 1400 कि.ग्रा रखा गया। थारपारकर देशी गौवंश के उन्नयन एवं संवर्द्धन का कार्य राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के बीछवाल (बीकानेर) और चांदन (जैसलमेर) स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर किया जा रहा है। बीछवाल केन्द्र पर थारपारकर की 140 गाय, बछड़े–बछड़ियां और सांड हैं। चांदन केन्द्र पर 451 की संख्या में इनका पालन हो रहा है। इस नस्ल की गायों के प्रथम ब्यात की अवधि घटकर 1290 दिन तक हुई है। राष्ट्रीय पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो के प्रति ब्यांत औसत दूध उत्पादन 1800 लीटर की तुलना में इस नस्ल के गौवंश का दुग्ध उत्पादन बढ़कर 4905 लीटर प्रति ब्यांत हो गया है। इस नस्ल से प्रतिदिन अधिकतम दूध उत्पादन 25 लीटर तक पाया गया है। राज्य की गौशालाओं और पंचायत स्तर पर नस्ल सुधार के लिए विश्वविद्यालय द्वारा 140 श्रेष्ठ नस्ल के बछड़े और सांडों का वितरण किया जा चुका है।

## अपने विश्वविद्यालय को जानें

# पशु पोषण विभाग, बीकानेर

प्रिंस बिजेयसिंह पैलेस के पिछले भाग के विरासतकालीन सार्दुल सदन में ईस्वी 1954 में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की स्थापना से ही पशु पोषण विभाग अस्तित्व में आया। यहां पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में पोषण से संबंधित अध्ययन–अध्यापन, अनुसंधान, प्रसार कार्य, चारा एवं पशु आहार का विश्लेषण और सलाहकारी सेवाएं प्रदान की जाती हैं। विभाग द्वारा पशुचिकित्सा एव पशु विज्ञान के स्नातक स्तर पर 100 विद्यार्थियों को पशु पोषण के पाठ्यक्रम के अध्यापन की सुविधा है। विभाग द्वारा अब तक स्नातकोत्तर के 80 और विद्यावाचस्पति के 15 छात्र–छात्राओं को अध्यापन करवाया गया है। इसके अलावा पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए प्रति वर्ष 50 विद्यार्थियों को अध्यापन की सुविधा प्रदान की है। शिक्षण और अनुसंधान कार्यों के लिए अत्याधुनिक उपकरण और प्रयोगशालाएं इस विभाग में स्थापित हैं जिनमें स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की विश्लेषण, इन–विट्रो और हाईटेक प्रयोगशालाएं शामिल हैं। विभाग में उन्नत किस्म के अत्याधुनिक उपकरण जैसे कि परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, बेकमेन वीजीबल यू.वी स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, गैस क्रोमेटोग्राफ, सेमी ऑटोमेटिक नाईट्रोजन एनालाईजर, सोक्स–टेक, फाईबर टेक, नीयर इन्फ्रारेड एनालाईजर, रूसी–टेक और हाइड्रोनपोनिक्स मशीन भी यहां उपलब्ध है। इसके साथ ही पशु आहार और चारे की जांच और विश्लेषण के उपकरण, आहार और चारे का म्यूजियम, स्मार्ट क्लास रूम, सेमीनार कक्ष और पशु प्रयोग केन्द्र भी यहां उपलब्ध हैं। विभाग द्वारा यूसेएड, यूजीसी, आई.सी.ए.आर, एन.ए.टी.पी.,एन.एफ.बी.एस.आर.ए. की राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया गया है। वर्तमान में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत दो अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। पोषण विभाग द्वारा विभागीय स्तर पर भी अनेकों अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया गया है। संपूर्ण आहार ईंट, स्थानीय कृषकों के उपयोग के लिए संपूर्ण पौष्टिक आहार और रिलायन्स इण्डस्ट्रीज के साथ मिलकर कम लागत की चारे संरक्षण की साईलेज बैग जैसी लोकप्रिय तकनीक को ईजाद कर पशुपालकों को लाभान्वित किया है।

# गाय व भैंस में जर गिरना

गाय–भैंस का छोटा बच्चा गर्भाशय (बच्चादानी) में जब पलता–बढ़ता है, तब बच्चा चार पारदर्शक परदों में चिपका रहता है। इन चार परदों में तेल जैसा द्रव्य होता है। बच्चा पैदा होने के बाद, चारों परदे 3 से 4 घंटे में बाहर गिरकर, गर्भाशय का पूरा खाली होना अति आवश्यक है। यह तभी सम्भव होता है जब पशु पूर्णरूप से स्वस्थ हो तथा गर्भकाल के आखरी दो माह के समय में पशु को सम्पूर्ण, सन्तुलित आहार खिलाया गया हो परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में अधिकतर जर अपने आप बाहर नहीं आती है। जर के अटकने के कई कारण हो सकते हैं जैसे –आहार में पौष्टिक तत्वों की कमी, नवजात बच्चा जन्म लेते समय गर्भाशय में अटक जाना, बच्चे को गलत तरीके से खींच कर बाहर निकालना, बच्चे के जन्म में अधिक समय लगना, गर्भाशय में बच्चे की असाधारण अवस्था, पशु किसी रोग से पीड़ित है जिससे कभी–कभी गर्भाशय बहुत दुबला हो गया है, बच्चे का आकार सामान्य से बड़ा है, एक साथ दो बच्चों का पैदा होना। ऐसे कई कारणों से गर्भाशय में जर अटकने की संभावना हो सकती है। अटके हुए जर को अगर अच्छी तरह एवं पूर्णरूप से नहीं निकाला तो गर्भाशय में रोग लग कर खराबी कर देता है और आगे ग्याभिन होने के लिए बहुत परेशानी होती है। दूध का उत्पादन काफी कम हो जाता है। अतः गर्भाशय में जर अटकना बहुत नुकसानदायक व पीड़ादायक होता है। इसलिए जर को ठीक ढंग से समय रहते पशुचिकित्सा विशेषज्ञ से निकलवाना अति आवश्यक है। गाय/भैंस में जर निकालने के बाद टीके लगवाना तथा गर्भाशय में उचित दवा रखना गर्भाशय को वापस स्वस्थ करने में सहायक होता है। ऐसा करने से पशु को तुरन्त आराम मिलता है और यदि ऐसा प्रबंध नहीं किया तो अन्य बीमारियां लगने की अत्यधिक संभावना बन जाती है। इन सब को ध्यान में रखते हुए यह सलाह दी जाती है कि कम से कम तीन दिन तक लगातार पशुचिकित्सक से दवा का गर्भाशय में छोड़ना जरूरी होता है अन्यथा आधा–अधूरा इलाज का कोई फायदा नहीं होता है, बल्कि पैसों का खर्च व्यर्थ हो जाता है। यदि गाय–भैंस की जर अच्छी तरह से 3–4 घंटे में प्राकृतिक रूप से अपने आप गिर गई हो तो गर्भाशय में गोलियां और द्रवरूप में दवा छोड़ने की किसी भी तरह की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई सलाहकार अपने फायदे के लिए गर्भाशय का इलाज करवाने की सलाह देता है तो उसको मना करना चाहिए, क्योंकि बिना जरूरत, खर्च के साथ साथ गाय–भैंस को अनावश्यक तकलीफ होती है और बिना कारण गर्भाशय के साथ छेड़छाड़ करने से गर्भाशय की क्रिया या उसकी स्वस्थता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः गाय–भैंस का गर्भाशय हमेशा स्वस्थ रखें क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध नियमित प्रजनन, नियमित प्रसव तथा क्षमता अनुसार दूध उत्पादन से जुड़ा हुआ है।

**डॉ. पी.डी.स्वामी, (9414242755) डॉ. मोहनलाल यादव**
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

# पशु के शरीर की बाहरी रचना से उसकी शारीरिक क्रियाओं को जानें

पशु के शरीर की बाहरी रचना का शारीरिक क्रियाओं से काफी गहरा सम्बन्ध होता है। पशुपालक इसे देखकर पशु की स्वास्थ्य स्थिति का आंकलन कर सकते हैं।

- पशु के शरीर की सामान्य बनावट औसत कद, मुलायम त्वचा, सुविकसित अंग तथा अच्छा स्वास्थ्य पशु को अच्छा उत्पादक तथा अधिक कार्य करने वाला प्रदर्शित करते हैं।
- चुस्त शरीर, बड़ी–बड़ी चमकीली आंखें और चौकन्ने कान पशु का स्वस्थ होना प्रदर्शित करते हैं।
- बड़े–बड़े खुले नथुने, पशु के श्वसन तन्त्र का सुविकसित होना प्रकट करते हैं।
- चौड़ा मुंह, सुदृढ़ जबड़े तथा मजबूत दांत इस बात के घोतक है कि पशु भली–भांति चबा–बचाकर खाने वाला है, ऐसा पशु अधिक उत्पादक होता है।
- सुदृढ़ तथा औसत लम्बाई के ऊपर से नीचे की ओर ढलवां पैर, अच्छे कार्य करने वाले पशुओं में वांछनीय है, खुर एक समान काले रंग के तथा उनके बीच में विदर का फासला कम होना अधिक अच्छा होता है।
- सींग औसत लम्बाई के साथ गुट्ठल होने चाहिए, इससे उनके सम्पर्क में रहने वाले मनुष्यों को कोई भय नहीं रहता और साथ ही पशु को भी आराम मिलता है।
- ढले हुए जोड़, अच्छी सुविकसित हड्डियां दुधारू तथा अधिक कार्य करने वाले पशुओं की निशानी है।
- हल्के, छोटे और गुटठ्ल सींग तथा लम्बे, पतले व नुकीले सींग क्रमशः शान्त और खूंखार होना प्रकट करते हैं।
- बैलों तथा सांड़ों का ठाठ उठा हुआ अच्छा माना जाता है, जबकि गायों में पतली गर्दन, छोटा ठांठ तथा मध्यम गलकम्लब दुधारू होने की निशानी है।
- वक्ष एवं हृदय घेरे का बड़ा होना, फेफड़ों एवं हृदय का सुविकसित होना प्रकट करता है।
- लम्बी, चपटी, उभरी हुई तथा बड़ी–बड़ी पसलियों एवं उभरा हुआ तलपेट पशु के भीतरी अंगों का सुविकसित होना प्रकट करता है।
- पिन बोन जितनी ही एक–दूसरे से दूर–दूर होगी उतना ही अच्छा होता है, क्योंकि इससे ब्याने के समय कष्ट कम होगा।
- कूल्हे की हड्डियों के मध्य जितना अधिक फासला होगा, उतना ही बच्चा देने वाली गाय के गर्भाशय का विकास हो सकेगा और साथ ही बच्चे के उलझने की सम्भावना कम होगी।
- चिकना, लचीला सुविकसित थनोंदार बड़ा तथा उभरी हुई दुग्ध–शिराओं वाला अयन गाय के अच्छे दुग्धोत्पादन का द्योतक है।
- गांठों रहित मुलायम अयन यह प्रकट करता है कि अयन रोगाणुओं से रहित है, अतः दुग्ध उत्पादन अधिक होगा।
- नर पशुओं में बडे–बड़े तथा समान अण्डकोश एवं मुलायम वृषण कोश इस बात को प्रदर्शित करते हैं कि वह अच्छा तथा उत्तम प्रजनन करने वाला है।

**–डॉ. रजनी अरोड़ा (9414080359)**
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

# राजस्थान में बकरी प्रजनन नीति

बकरी को "गरीब की गाय" भी कहा जाता है क्योंकि समाज के गरीब एवं पिछडे वर्ग का बड़ा हिस्सा बकरीपालन द्वारा अपनी जीविकोपार्जन करता है। हमारे प्रदेश में लगभग 10 लाख से अधिक परिवार बकरी तथा भेड़ पालन में जुडे हुए हैं। बकरी के मांस, दूध एवं अन्य उत्पादों की उपयोगिता के कारण यह प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। फिर भी बकरी व्यवसाय में निम्न चुनौतियां बहुत समय से चली आ रही हैं :

1. उच्च उत्पादन क्षमता वाली नस्लों का अभाव।
2. चारागाह भूमि की कमी।
3. पशु क्रय–विक्रय हेतु आधार सुविधा का अभाव।
4. पशु उत्पाद जैसे मांस एवं दूध का उपयोग करने वाले प्रसंस्करण उद्योग का अभाव।

इसके अलावा प्रमुख चुनौती के रूप में नीतिगत प्रजनन नीति का अभाव है, जिससे बकरियों में न्यून उत्पादकता होती है। राजस्थान में पाई जाने वाली पांच प्रमुख नस्लें सिरोही, मारवाड़ी, जखराना, बरबरी एवं जमनापारी है। इनमें से सिरोही एवं जखराना नस्ल की दूसरे राज्यों में भी मांग है। इन नस्लों में सुधार कर उत्पादन क्षमता को बढ़ा कर पशुपालन एवं प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है। सन् 1981 में स्विस सरकार के सहयोग से राज्य सरकार द्वारा "इण्डो स्विस गोट डवलपमेन्ट एण्ड फोडर प्रोडक्शन प्रोजेक्ट" के माध्यम से सिरोही बकरी में संकर प्रजनन शुरू किया गया, जिसके फलस्वरूप मांस एवं दूध उत्पादन में बढोतरी दर्ज की गई परन्तु साथ ही मृत्यु दर में भी 25 प्रतिशत तक वृद्धि पायी गयी। संकर प्रजनन के असन्तोषजनक परिणामस्वरूप बकरियों के नस्लीय सुधार हेतु सिरोही नस्ल का उपयोग प्रारम्भ किया गया ताकि बकरी की उत्पादकता बढाई जा सके।

**बकरी प्रजनन नीतिः–**

- सिरोही, मारवाडी, जखराना, बरबरी एवं जमनापारी नस्ल की शारीरिक वजन व दूध उत्पादकता सुधार हेतु चयनित प्रजनन।
- अवर्गीकृत बकरियों में उन्नयन।
- जखराना नस्ल का संरक्षण।
- अवांछित प्रजनन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अवर्गीकृत बकरों का बधियाकरण।
- ऐसे सभी उपाय किये जाएं ताकि झुण्ड में अन्तः प्रजनन नहीं हो।
- एक झुण्ड में दो वर्ष से अधिक एक बकरे का उपयोग नहीं किया जाए।
- परिभाषित देशी नस्ल के संरक्षण व संवर्द्धन हेतु उस नस्ल के बकरों का वितरण उनके गृह क्षेत्र में किया जाए।

**बकरों का चयनः** बकरों का चयन उस नस्ल के शारीरिक नस्ल गुणों के आधार पर किया जाये। चयन के समय उसका न्यूनतम वजन 30 किलोग्राम तथा आयु 9–12 माह होनी चाहिये।

| क्र. स. | संभाग | उपलब्ध नस्ल | प्रजनन हेतु प्रस्तावित नस्ल | पालन करने का प्रयोजन मांस/दूध/दोनों |
|---|---|---|---|---|
| 1. | जयपुर | सिरोही, बरबरी, मारवाडी, जखराना, जमनापारी, अवर्गीकृत | सिरोही, बरबरी, मारवाडी, जखराना एवं जमनापारी | दोनों |
| 2. | बीकानेर | मारवाड़ी, सिरोही, अवर्गीकृत, | मारवाड़ी एवं सिरोही | दोनों |
| 3. | जोधपुर | मारवाड़ी, सिरोही | मारवाड़ी, सिरोही | दोनों |
| 4. | उदयपुर | सिरोही | सिरोही | दोनों |
| 5. | अजमेर | सिरोही,बरबरी, अवर्गीकृत | सिरोही, बरबरी | दोनों |
| 6. | कोटा | सिरोही, अवर्गीकृत | सिरोही | दोनों |
| 7. | भरतपुर | सिरोही, जमनापारी, बरबरी, अवर्गीकृत | सिरोही, जमनापारी, बरबरी | दोनों |

–ड़ॉ सुनीता पारीक, ड़ॉ बरखा गुप्ता एवं ड़ॉ हिना अशरफ वाइज
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, उदयपुर

# पशुओं को गलघोंटू रोग से कैसे बचाएं

पशुओं में गलघोंटू रोग जिसे वैज्ञानिक भाषा में हिमोरेजिक सेप्टीसिमिया भी कहते हैं, एक बहुत खतरनाक रोग है। यह रोग जीवाणुजनित है और तनाव की स्थिति में यह रोग पशुओं को प्रभावित करता है। पशुओं में तनाव विभिन्न कारणों से हो सकते हैं, जिसमें मुख्यतः पशुओं का परिवहन, मौसम में अचानक बदलाव, कम स्थान पर ज्यादा पशुओं को बांधना, बाड़े में गंदगी, दुषित चारा अथवा पानी और रोग–प्रतिरोधक क्षमता में कमी है। गलघोंटू रोग से प्रभावित पशु को पशुपालक लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचान सकते हैं। इस रोग से प्रभावित पशु को बहुत तेज बुखार होता है, गले में सूजन आ जाती है, श्वांस में तकलीफ होती है, घर्र–घर्र की आवाज होती है, नाक में से स्त्राव निकलता है और तुरंत इलाज न मिलने की स्थिति में पशु की मौत हो जाती है। गलघोंटू रोग का टीकाकरण द्वारा बचाव सम्भव है। पशुपालक भाईयों को चाहिए कि समय पर इस रोग से बचाव के लिए टीके अवश्य लगवा लें। यदि पशुओं का अभी तक टीकाकरण नहीं करवाया है तो पशुपालक अपने पशुओं को बचाव के लिए सर्दी से पहले भी टीकाकरण करवा सकते हैं। इस रोग से प्रभावित होने पर निकटतम पशु चिकित्सालय में पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर तुरंत उपचार करवायें अन्यथा पशु की मृत्यु की पूरी सम्भावना रहती है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास ( मो. 9460073909 )

# सफलता की कहानी

## चाकसू के श्रीराम ने दुधारू पशुओं को खनिज मिश्रण खिला अधिक आय प्राप्त की

पशुओं को आहार में खनिज मिश्रण खिलाने से पशुपालकों को उत्पादन से होने वाली आय में वृद्धि होती है। गांव महाचन्द्रपुरा (चाकसू) जयपुर के प्रगतिशील पशुपालक श्रीराम पुत्र रामसहाय कृषि के साथ–साथ पशुओं से भी अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं। इस सफलता को उनकी जुबानी ही सुनिए – मैं कृषि के साथ भैंस पालन कर दूध डेयरी में देता था लेकिन मेरे दूध में एस.एन.एफ व वसा दोनों कम आने से दूध की कीमत कम मिलती थी। एस.एन.एफ 8.5% से कम आने पर डेयरी वाले 50 पैसे प्रति लीटर दूध के पैसे कम दे रहे थे। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के पी. जी.आई.वी.इ.आर.,जयपुर से राष्ट्रीय विकास कृषि योजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक डॉ. शीला चौधरी ने हमारे गाँव में आकर पशुओं में खनिज मिश्रण की उपयोगिता के बारे में बताया और साथ ही निःशुल्क खनिज मिश्रण दो महीने तक उपलब्ध भी करवाया। जैसे ही वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा बना खनिज मिश्रण भैंस को प्रतिदिन 50 ग्राम खिलाना शुरू किया, चार पांच दिन में ही मेरी भैंस का दूध बढ़ने लगा तथा एक लीटर तक दूध प्रति दिन बढ़ कर मिलने लग गया। मेरी भैंस के दूध में पहले 8.4% एस.एन.एफ आती थी वह बढ़कर 9% हो गई तथा वसा 5% से बढ़ कर 6-6.2% हो गई इस तरह जहां पहले, मैं डेयरी में आठ लीटर दूध देता था तो मुझे प्रति लीटर दूध दर 32 रु. मिलते थे वहीं वेटरनरी विश्वविद्यालय का खनिज मिश्रण खिलाने से मुझे अब यह दूध 37 रु. प्रति लीटर पड़ने लगा। मैं डेयरी में अब 9 लीटर प्रति दिन दूध दे रहा हूं । इस तरह प्रतिदिन 50 ग्राम खनिज मिश्रण खिलाने पर रु. 77 की प्रतिदिन अधिक आमदनी होने लगी और मुझे एक महीने में रु. 2300 से 2500 तक का फायदा होने लगा। महाचन्द्रपुरा के सभी पशुपालकों की ओर से वेटरनरी विश्वविद्यालय का आभार प्रकट करते हुए सभी वैज्ञानिकों को भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने हमें खनिज मिश्रण का महत्त्व समझाया जिससे हमारे गाँव के सभी पशुपालकों को आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ है।

स्त्रोत : – प्रो. शीला चौधरी
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान संस्थान, जयपुर

## निदेशक की कलम से...

# सर्दियों में पशुओं के बचाव व आहार का उचित प्रबंधन करें

**प्रिय किसान और पशुपालक भाईयों !**

हमारे यहां दिसम्बर, जनवरी और फरवरी माह में तेज सर्दी के कारण वातावरण ठंडा रहता है। आम आदमी की तरह पशुओं के लिए भी सर्दी नुकसानदेय हो सकती है। पशुपालकों को अपने पशुधन के आवास–निवास व बैठने की व्यवस्था, पीने के पानी की व्यवस्था, उनके खाने के लिए पौष्टिक चारे व बांटे की व्यवस्था से लेकर समुचित रख–रखाव के उपाय करने चाहिए जिससे पशुधन को सर्दी से बचाया जा सके। सभी प्रकार के पशुओं (दूध देने वाले, दूध न देने वाले, औसर पशु) की उत्पादन क्षमता और शारीरिक स्थिति को बनाये रखने के लिए सर्दियों में पोषण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। क्योंकि यही उचित समय है जब पशु अपने शरीर के पोषक तत्वों की पूर्ति कर सकेंगे तथा आने वाले समय के लिए अपने शरीर में पोषक तत्व जमा कर सकेगा। सर्दियों के मौसम में पशु अपने आप को गर्म करने के लिए 15–20 प्रतिशत अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग करते हैं। सर्दियों के दौरान तापमान में अचानक गिरावट, पशुओं के लिए अधिक पोषण ग्रहण करने का कारण है। सर्दियों में पशुओं की संतुलित खिलाई–पिलाई करनी चाहिए। सूखे चारे के साथ हरा चारा व दाना–बांटा पशु को उत्पादन के अनुसार देना चाहिए। खुराक में अधिक ऊर्जा पैदा करने वाले अवयव जैसे गुड़, तेल आदि मिलाना चाहिए, इससे पशु का शरीर गर्म रहता है। इसके लिए उबली हुई बाजरी, गुड़, तेल, जौ का दलिया व चापड़ भी काम में लिये जा सकते हैं। आमतौर पर सर्दियों में आहार की पूर्ति, काट कर खिलाये जाने वाले चारे के रूप में की जाती है। सर्दियों में खिलाये जाने वाले मुख्य हरे चारों में रिजका, बरसीम और सरसों है तथा मुख्य सूखे चारों में बाजरे की कड़बी, मूंगफली का गुना, मोठ चारा, मूंग चारा आदि शामिल है। फसलों के अवशेष को भी सर्दियों में चारे के रूप में उपयोग लिया जा सकता है। अतः पशुपालक भाईयों को चाहिये कि सर्दी के मौसम में पशु की विशेष देखभाल के साथ ही सन्तुलित आहार देकर अधिक उत्पादन लें। – **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** प्रसार शिक्षा निदेशक (मो0 9414283388)

## राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **दिसम्बर 2015** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

| क्र.सं. | वार्ताकार का नाम व विभाग | वार्ता का विषय | प्रसारण तिथि |
|---|---|---|---|
| 1 | **प्रो. सुभाषचन्द्र गोस्वामी** **9414604655**<br>विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग | विश्वविद्यालय द्वारा पशु जैव विविधता संरक्षण के प्रयास | 03.12.2015 |
| 2 | **प्रो. जे. एस. मेहता** **9414278372**<br>विभागाध्यक्ष, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान विभाग | पशुओं में ब्याहने के समय होने वाली समस्या व निदान | 10.12.2015 |
| 3 | **प्रो. राकेश माथुर** **9414230025**<br>विभागाध्यक्ष, पशु शरीर रचना एवं औतिकी विभाग | अधिक दुधारू पशुओं की पहचान कैसे करें | 17.12.2015 |
| 4 | **डॉ. एल.एन. सांखला** **9460067057**<br>पशु औषध विष विज्ञान विभाग, सीवीएएस, बीकानेर | पशुओं में धातुओं से होने वाली विषाक्तता और उसका उपचार | 24.12.2015 |
| 5 | **डॉ. इन्दु व्यास** **9351412913**<br>पशु व्याधिकी विभाग, सीवीएएस, बीकानेर | स्वास्थ्य प्रबंधन से रोकी जा सकती है पशुओं में बीमारियां | 31.12.2015 |

## मुस्कान !

संपादक
**प्रो. आर. के. धूड़िया**
सह संपादक
**प्रो. ए. के. कटारिया**
**प्रो. उर्मिला पानू**
**दिनेश चन्द्र सक्सेना**
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
**सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली**
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
**पशु पालन नए आयाम**
**मासिक अंक : दिसम्बर, 2015**

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया